Roll No. ……..

PJ–102

फलित ज्योतिष के आधारभूत सिद्धान्त

फलित ज्योतिष में डिप्लोमा / प्रमाणपत्र

(डी. पी. जे. / सी. पी. जे—12 / 16 / 17)

प्रथम सेमेस्टर, सत्र 2017

समय : 3 घंटा पूर्णांक : 80

नोट : यह प्रश्न पत्र अस्सी (80) अंकों का है जो तीन (03) खण्डों 'क', 'ख' तथा 'ग' में विभाजित है। शिक्षार्थियों को इन खण्डों में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में चार (04) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. मेषादि द्वादश राशियों के गुणधर्म का विस्तृत विवेचन कीजिए।
2. सूर्यादि ग्रहों के मित्रादि विचार को लिखिए।
3. द्वादश राशियों में चन्द्रमा के शुभाशुभ फलों का वर्णन कीजिए।
4. चन्द्रमा से बनने वाले योगों का विस्तृत विवेचन कीजिए।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. सूर्य से बनने वाले योगों की विवेचना कीजिए।
2. शुक्र से निर्मित महापुरुष योग एवं उसके फल का वर्णन कीजिए।
3. ज्योतिषशास्त्र का परिचय प्रस्तुत कीजिए।
4. गुरु एवं बुध के गुणधर्म का वर्णन कीजिए।
5. ग्रहों की बालादि अवस्थाओं का वर्णन कीजिए।
6. तन्वादि द्वादश भाव के कारक ग्रहों का विवेचन कीजिए।
7. द्वादश भावों में सूर्य के फल को लिखिए।
8. स्वकल्पित उदाहरण के द्वारा विंशोत्तरी महादशा का साधन कीजिए।

खण्ड–ग

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ग' में दस (10) वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए एक (01) अंक निर्धारित है। इस खण्ड के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

सही उत्तर का चयन कीजिए :

1. ज्योतिष के स्कन्धों की संख्या है :
   (i) 3
   (ii) 4
   (iii) 6
   (iv) 8

2. गुरु के मित्र हैं :
   (i) चन्द्रमा, सूर्य, मंगल
   (ii) शनि, शुक्र
   (iii) बुध, सूर्य, शनि
   (iv) उपर्युक्त सभी
3. मंगल की विशेष दृष्टि है :
   (i) 4, 8
   (ii) 1, 2
   (iii) 7, 9
   (iv) 5, 8
4. चतुर्थ भाव के कारक हैं :
   (i) सूर्य
   (ii) मंगल
   (iii) चन्द्र
   (iv) गुरु
5. धनु एवं मीन के अधिपति हैं :
   (i) मंगल
   (ii) बुध
   (iii) चन्द्र
   (iv) गुरु
6. रूचक योग बनता है :
   (i) गुरु से
   (ii) बुध से
   (iii) सूर्य से
   (iv) मंगल से

7. विंशोत्तरी महादशा में नक्षत्र गणना होती है :

(i) अश्विनी से

(ii) कृन्तिका से

(iii) पूष्य से

(iv) आर्द्रा से

8. मंगल का महादशा वर्ष होता है :

(i) 7 वर्ष

(ii) 10 वर्ष

(iii) 18 वर्ष

(iv) 16 वर्ष

9. अनफा योग का निर्माण होता है :

(i) सूर्य से

(ii) मंगल से

(iii) चन्द्र से

(iv) बुध से

10. विष्कुम्भादि योगों की संख्या है :

(i) 28

(ii) 27

(iii) 9

(iv) 108